Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में सामाजिक रूढ़ियों का यथार्थ

डॉ. आशा अग्रवाल* बन्दना कुमारी**

*** प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत**

**** शोधार्थी (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत**

प्रस्तावना – 'रूढ़ि' किसी भी प्रगतिशील समाज के विकास को बाधित करने वाला तत्व माना जाता है। रूढ़ि में कोई तार्किकता नहीं होती है। पारम्परिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसका निर्वहण किया जाता है। रूढ़िग्रस्त समाज के अन्तर्गत लोग बिना तर्क एवं आधार के परम्पराओं को अनुसरण करते हैं। ऐसे समाज में नैतिकता, वैज्ञानिकता एवं समसामयिकता की अवहेलना कर धर्म के नाम पर अंधविश्वासों को महत्व दिया जाता है। इन रूढ़ियों का सबसें बुरा प्रभाव स्त्रियों, दलितों एवं अन्य पिछड़े वर्गों पर पड़ता है। भारतीय समाज में आज भी कई रूढ़ियां व्याप्त हैं, जैसे- जातिवाद, अस्पृष्यता एवं बाल-विवाह आदि। बिना सोचे समझे इन रूढ़ियों का पालन करने से समाज में जड़ता आ जाती है। उसमें नवनिर्माण की क्षमता नहीं रह जाती है।

चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यासों में समाज के पीड़ित, शोषित, वंचित एवं उपेक्षित वर्गों की आवाज को मुखरता के साथ व्यक्त किया है। समाज में व्याप्त रूढ़ियों को उन्होंने अपने उपन्यास में बहुआयामी रूप से उजागर किया है। 'एक जमीन अपनी' उपन्यास की नायिका अंकिता एक स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में अपने कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ना चाहती है तो उसे एक अहिष्णु एवं तेज-तर्रार स्त्री समझा जाता है। रूढ़िग्रस्त समाज में स्त्रियों की कर्मस्थली घर को माना गया है। पारम्परिक रूप से समाज में बाहर का काम पुरूषों का माना गया है। अंकिता का पति सुधांशु पितृसत्तात्मक समाज की रूढ़ियों से ग्रसित है, जहाँ पति को पत्नी का स्वामी माना गया है। स्वतंत्र विचारों वाली स्त्री होने के कारण अंकित के मन में इन रूढ़ियों के प्रति विद्रोह का भाव है 'मैं घर को जीना चाहती हूँ, बरदाशत करना नहीं..... और .....।' 'और.....धर्मशाला की तख्ती आज से मेरे घर के दरवाजे पर नहीं टंगेंगे..... 'मैं सिर्फ गृहणी ही नहीं हूँ..... एक स्त्री भी हूँ.....' आखिर सुबह से रात के बीच कोई एक क्षण ऐसा नहीं हो सकता जिसे मैं नितांत अपने लिए जी सकूं..... लिखना चाहती हूँ लिख सकूं?'[1]

सुधांशु अंकिता की इन बातों से तिलमिलाते हुए कहता है 'यह मेरा घर है.... और यहाँ तख्ती वही लटकेगी जैसी मैं चाहूँगा..... इसका फैसला तुम कैसे कर सकती हो?'[2]

यहाँ सुधांशु की पितृसत्तात्मक रूढ़ि से ग्रस्त मानसिकता उजागर होती है, जहाँ पुरूष को घर का मुखिया माना जाता है। घर से जुड़े सभी फैसले लेने का हक भी है उसी के पास होता है। समाज में एक रूढ़ि यह भी है कि तलाकशुदा स्त्री संस्कारवान नहीं होती। यह रूढ़िग्रस्त समाज उसके चरित्र को संदेह की दृष्टि से देखता है 'स्वयं अपने विषय में उसे बड़ा कचोट भरा अनुभव है कि औरत की स्वतंत्रता उसकी सबसे बड़ी दुश्मन है, दुश्चरित्रता का प्रमाण-पत्र ! सुधांशु से अलग होकर जब वह घर लौटी थी, आस पड़ौस ने ही नहीं, पूरे शहर ने छींटाकाशी की थी, 'नौकरी करने वाली लड़की कहीं घर में बंद होकर टिक सकती है ? अरे, इसका तो अपने फुफेरे भाई के साथ पुराना चक्कर था दुल्हे ने रंगे हाथ पकड़ा तो.....' सुन-सुनकर कुछ रोज तक तो उसने घर से निकलना बंद कर दिया।'[3]

इसी प्रकार 'आवा' उपन्यास में नमिता के पिता देवीशंकर पांडे की मृत्यु के बाद क्रिया-कर्म एवं मुखाग्नि देने के लिए नमिता आगे बढ़ती है 'क्रियाकर्म मैं करूंगी पंड़ित जी, मुखाग्नि भी मैं ही दूंगी। मैं पांडेजी की बड़ी बेटी हूँ छुन्नू बच्चा है। बच्चे के हाथ से क्रियाकर्म करवाना उचित नहीं है।'[4]

हमारे समाज में एक धार्मिक रूढ़ि प्रचलित है कि मुखाग्नि सिर्फ बेटा ही दे सकता है, बेटी नहीं। परन्तु यह रूढ़ परम्परा अब बदल रही है। कई परिवारों में बेटियां भी मुखाग्नि दे रही है और कर्मकांड कर रही हैं। 'आवां' उपन्यास में नमिता ने उसी रूढ़ि का वरोध किया है। जबकि उसकी माँ उसके इस व्यवहार से क्रोधित होती है।

वृद्ध जीवन की समस्याओं पर आधारित उपन्यास 'गिलिगडु' में वृद्धों के प्रति समाज की रूढ़िग्रस्त मानसिकता को दर्शाया गया है। हमारे समाज में लोग पिता की मृत्यु के बाद श्राद्ध एवं तर्पण करते हैं परन्तु जीवित पिता की उपेक्षा करती हैं। इस उपन्यास में बाबू जसवंत सिंह अपने बेटे बहू की उपेक्षा का शिकार होते हैं। उनके बेटे-बहू के अंतर्मन में बसी रूढ़ियों को दर्षाता है। 'मान लेना होगा। श्रवण कुमार अब किस्से कहानियों में ही ढूंढे मिलेंगे। दिल्ली के दर्शानीय स्थलों का भ्रमण तक उन्हें कर्नल स्वामी ने कराया। जेन है नरेन्द्र के पिता जिसका सदुपयोग बीबी के विदेश से आने जाने वाले संग-सम्बन्धियो को एयरपोट्र लाने-ले जाने, घुमाने-फिराने के लिए होता रहता है। एक उनके लिए नरेन्द्र को फुरसत खोजे नहीं मिलती। कहाँ की ले बैठे?'[5]

'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' में चित्रा जी ने यह दर्शाया है कि रूढ़िग्रस्त समाज में सिर्फ दो लिंगों स्त्री एवं पुरूष को ही मान्यता दी गई है। तृतीय लिंग को हमारा यह रूढ़िग्रस्त समाज स्वीकार नहीं करता है। तृतीय लिंगी को यहाँ सिर्फ भिखारी, हँसी का पात्र एवं पारिवारिक शुभ कार्य में नेक

देने के लायक ही समझा जाता है। यह समाज उससे नफरत करता है। उपन्यास का नायक विनोद उर्फ बिन्नी एक तृतीय लिंगी अर्थात् किन्नर है। वह सामाजिक, मानसिक पीड़ा एवं आत्मिक द्वन्द्व से गुजर रहा है। रूढ़िग्रस्त समाज द्वारा अस्वीकार एवं बदनामी के डर से परिवार के लोग उसे त्याग देते हैं। वह अपनी माँ 'बा' का पत्र में लिखता है 'तूने मेरी बा तूने और पप्पा ने मिलकर मुझे कसाइयों के हाथ मासूम बकरी सा सौंप दिया।'[6]

आगे वह कहता है 'जिस नरक में तने और पप्पा ने धकेला है मुझे, वह एक अंधा कुआँ है जिसमें सिर्फ सांप-बिच्छू रहते हैं। सांप-बिच्छू बनकर वह पैदा नहीं हुए होंगे। ब इस कुएँ ने उन्हें आदमी नहीं रहने दिया।'[7]

आत्मकथात्मक उपन्यास 'नकटौरा' में भी चित्रा जी ने रूढ़िग्रस्त समाज का यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। इस उपन्यास में उन्होंने जाति-धर्म के आधार पर भेदभाव, अस्पृष्यता, वर्ग-भेद, लिंग-भेद एवं धार्मिक रूढ़ियों पर प्रकाश डाला है। उपन्यास में सिराज एक मुस्लिम बच्चा है। चित्रा जी की सखी मंदा का उससे धर्म के आधार पर भेदभाव करना चित्राजी को हैरान कर देता है। जब फोन पर सिराज उनसे कहता है 'मंदा ताई वैसी नहीं थी, जैसी आपा वह भाऊ से शादी करने से पहल थी। भाऊ मुझे नासिक की बजाय मुम्बई में ही रहना चाहते थे, मगर मंदा ताई ने साफ इंकार कर दिया। मुसलमान लड़के को वह अपने घर में नहीं रख सकती।'[8]

आगे वह कहता है 'मंदा ताई ने क्यों नहीं कभी मुझसे मेरे हालात जानने चाहे। इसलिए कि मैं एक मुस्लिम बच्चा था। सिर्फ बच्चा, जो जाति-धर्म के ऊपर होता है।'[9]

यहाँ चित्रा जी ने रूढ़िग्रस्त समाज के धार्मिक भेदभाव पर प्रकाश डाला है।

इस प्रकार चित्राजी के उपन्यासों में समाज का चित्रण स्पष्टता के साथ किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. एक जमीन अपनी, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-16
2. एक जमीन अपनी, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-16
3. एक जमीन अपनी, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-21
4. आवां, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-399
5. गिलिगडु, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-69
6. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-11
7. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-11
8. नकटौरा, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-304
9. नकटौरा, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ संख्या-306

****